मधुबन ओम् शान्ति अंक 369 अप्रैल 2023

पत्र-पुष्प

"दिव्यता की शक्ति से साधारणता को समाप्त कर दर्शनीय मूर्त बनो"

दादी जी की शुभ प्रेरणायें (21-03-23)

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति स्नेही, सदा समय की समीपता प्रमाण अपनी अव्यक्त फरिश्ता स्थिति बनाने वाले, ''ब्राह्मण सो फरिश्ता'' इस कम्बाइन्ड स्वरूप की स्मृति द्वारा साक्षात्कार मूर्त बनने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - आप सभी बेहद की सेवाओं के साथ अपनी दिव्यता स्वरूप स्थिति में स्थित रहने का पुरुषार्थ कर रहे होंगे। बाबा कहते बच्चे, जितना तुम दिव्यता की शक्ति धारण करेंगे उतना साधारणता समाप्त हो जायेगी। दिव्यता की शक्ति आपको दिव्य दर्शनीय मूर्त बना देगी। अनेक भक्त जो दर्शन के अभिलाषी हैं, उनके सामने जब आप स्वयं दिव्य दर्शनीय मूर्त प्रत्यक्ष होंगे तब सर्व आत्मायें दर्शन कर प्रसन्न होंगी। इसके लिए निमित्त मात्र देह का आधार लो, देह के सम्बन्धियों के साथ कार्य व्यवहार में आओ, लगाव से नहीं। कर्म करने के लिए देह का आधार लिया और फिर ऊपर, अब यही अभ्यास बढ़ाओ। इस अभ्यास से इच्छा मात्रम् अविद्या की स्थिति स्वत: बन जायेगी। देवताई जीवन में तो इच्छा की बात ही नहीं होगी लेकिन अभी इस ब्राह्मण जीवन सो फरिश्ता जीवन में भी कोई इच्छा नहीं। किसी कर्म के बन्धन में भी नहीं बंध सकते। भल सेवा का बन्धन है, लेकिन सेवा करते भी जितना प्यारा, उतना न्यारा। सदा स्वतन्त्रता की स्थिति का अनुभव हो। शरीर और कर्म के अधीन नहीं, अगर देहधारियों के सम्बन्ध में आते भी हैं तो ऊपर से आये, संदेश दिया और यह उड़ा, ऐसी स्थिति ही डबल लाइट फरिश्ता बना देगी। अभी हम सबको इसी अन्तिम फरिश्ते जीवन की मंज़िल पर पहुंचना है।

बाबा कहते बच्चे, अब अपनी सम्पूर्णता को समीप लाने के लिए एक बिन्दु की याद में एकरस अवस्था में रहो, एक की ही मत और एक के ही कर्तव्य में मददगार बनो। बाकी विस्तार में जाने की दरकार नहीं है। विस्तार में जाना है तो सिर्फ सर्विस प्रति। अगर सर्विस नहीं तो बिन्दु, उसके आगे अपनी बुद्धि को चलाने की आवश्यकता नहीं है। बोलो, हमारी मीठी मीठी बहिनें व भाई सभी ऐसी सम्पन्न वा सम्पूर्ण स्थिति बनाने के लिए पुरुषार्थ की अच्छी रेस कर रहे हो ना। बाबा ने रेस करने की तो छुट्टी दी है लेकिन कभी आपस में रीस (ईर्ष्या) नहीं करना। इस ड्रामा में हर एक आत्मा का अपना विशेष पार्ट है, जिसने जितना अपनी विशेषताओं को कार्य में लगाया है उतना वह विशेष बनता गया है।

बाकी अभी तो बाबा की यह अव्यक्ति अलौकिक मिलन महफिल की सीजन पूरी हुई। देश विदेश के अनेकानेक बच्चे बाबा मिलन के लिए मधुबन घर में आये और एक अनोखी छाप लेकर खूब भरपूर होकर गये। टोटल बाबा मिलन के 11 टर्न बहुत ही सफलता पूर्वक सम्पन्न हुए। अभी फिर 2 अप्रैल से 2023-2024 के लिए विशेष स्व-उन्नति और बेहद सेवाओं की वार्षिक मीटिंग है। उसमें जो भी प्लैन्स बनेंगे वह तो आप सभी प्रैक्टिकल में लायेंगे ही।

अच्छा - सभी उमंग-उत्साह के पंखों से उड़ते, प्रत्यक्षता और परिवर्तन की घड़ियों को समीप अनुभव करते, अपनी एकरस अचल अडोल स्थिति का अनुभव करते चलो। सबको बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.रतनमोहिनी

ये अव्यक्त इशारे

समय की समीपता प्रमाण अव्यक्त फरिश्ता बनो

1) जैसे सम्पन्नता का समय समीप आता जा रहा है, ऐसे देह-भान रहित फरिश्ता रूप की हर एक को अनुभूति कराओ। जैसे साकार ने कर्म करते, बातचीत करते, डायरेक्शन देते, उमंग-उत्साह बढ़ाते भी देह से न्यारे, सूक्ष्म प्रकाश रूप की अनुभूति कराई। ऐसे बात करते भी आपकी दृष्टि में अलौकिकता दिखाई दे। ऐसे देह-भान से न्यारे रहो जो दूसरे को भी देह का भान नहीं आये।

2) हर बात में, वृत्ति, दृष्टि, कर्म... सबमें न्यारापन अनुभव हो। यह बोल रहा है लेकिन न्यारा-न्यारा, आत्मिक प्यारा, ऐसे फरिश्तेपन की अनुभूति स्वयं भी करो और औरों को भी कराओ। ब्रह्मा बाप जो फरिश्ता रूप में आप सबका साथी है, अब उनके समान आप सभी को फरिश्ता बनना है फिर परमधाम चलना है, इसके लिए मन की एकाग्रता पर अटेन्शन दो। ऑर्डर से मन को चलाओ।

3) सदैव अपना आकारी रूप, लाइट का फरिश्ता स्वरूप सामने दिखाई दे कि ऐसा बनना है और भविष्य रूप भी दिखाई दे। अब यह छोड़ा और वह लिया। जब ऐसी अनुभूति हो तब समझो कि सम्पूर्णता के समीप हैं। यह पुरुषार्थी शरीर एकदम मर्ज हो जाये।

4) फरिश्ता बनना अर्थात् साकार शरीरधारी होते हुए लाइट रूप में रहना अर्थात् सदा बुद्धि द्वारा ऊपर की स्टेज पर रहना। फरिश्ते के पांव धरनी पर नहीं रहते, बुद्धि रूपी पांव सदा ऊंची स्टेज पर। फरिश्तों को ज्योति की काया दिखाते हैं। तो जितना अपने को प्रकाश स्वरूप आत्मा समझेंगे, तो चलते फिरते अनुभव करेंगे जैसे प्रकाश की काया वाले फरिश्ते बनकर चल रहे हैं।

5) फरिश्ता अर्थात् अपनी देह के भान से भी रिश्ता नहीं, देहभान से रिश्ता टूटना अर्थात् फरिश्ता। देह से नहीं, देह के भान से। देह से रिश्ता खत्म होगा तब तो चले जायेंगे, लेकिन देह-भान का रिश्ता खत्म हो। जैसे बापदादा पुराने शरीर का आधार लेते हैं लेकिन शरीर में फंस नहीं जाते हैं। ऐसे कर्म के लिए आधार लो और फिर अपने फरिश्ते स्वरूप में, निराकारी स्वरूप में स्थित हो जाओ।

6) जबकि बाप के बन गये और सब कुछ मेरा सो तेरा कर दिया तो हल्के फरिश्ते हो ही गये। इसके लिए सिर्फ एक ही शब्द याद रखो कि यह सब बाप का है, मेरा कुछ नहीं। जहाँ मेरा आये वहाँ तेरा कह दो फिर कोई बोझ नहीं फील होगा।

7) फरिश्ता अर्थात् डबल लाइट। फरिश्ता सदा चमकने के कारण सर्व को अपनी तरफ स्वत: आकर्षित करता है। फरिश्ता सदा ऊंचे रहते हैं। फरिश्तों को पंख दिखाते हैं क्योंकि उड़ते पंछी हैं। तो जब बाप मिला, ऊंचा स्थान मिला, ऊंची स्थिति मिली तो सदा उड़ते रहो और बेहद सेवा करते रहो।

8) फरिश्ता वही बनता जिसका देह और देह की दुनिया के साथ कोई रिश्ता नहीं। शरीर में रहते ही हैं सेवा के अर्थ, न कि रिश्ते के आधार पर। सम्बन्ध समझकर प्रवृत्ति में नहीं रहना, सेवा समझकर रहना। कर्मबन्धन के वशीभूत होकर नहीं रहना। जहाँ सेवा का भाव है वहाँ सदा शुभ भावना रहती है, और कोई भाव नहीं, इसको कहा जाता है अति न्यारा और अति प्यारा, कमल समान।

9) फरिश्ता स्वरूप अर्थात् लाइट का आकार, जिसमें कोई व्याधि नहीं, कोई पुराने संस्कार स्वभाव का अंश नहीं, कोई देह का रिश्ता नहीं, कोई मन की चंचलता नहीं, कोई बुद्धि के भटकने की आदत नहीं – ऐसा फरिश्ता स्वरूप, प्रकाशमय काया का अनुभव करो तो देह के स्वार्थी सम्बन्ध, सुख-शान्ति का चैन छीनने वाले विनाशी सम्बन्धी, मोह की रस्सियों में बांधने वाले, ऐसे अनेक सम्बन्ध स्वत: छूट जायेंगे। एक सुखदाई सम्बन्ध में ही सदा रहेंगे।

10) हम ब्राह्मण सो फरिश्ता हैं, यह कम्बाइन्ड रुप की अनुभूति विश्व के आगे साक्षात्कार मूर्त बनायेगी। ब्राह्मण सो फरिश्ता इस स्मृति द्वारा चलते-फिरते अपने को व्यक्त शरीर, व्यक्त देश में पार्ट बजाते हुए भी ब्रह्मा बाप के साथी अव्यक्त वतन के फरिश्ते, अव्यक्त रूपधारी अनुभव करेंगे। यह अव्यक्त भाव व्यक्तपन के बोल-चाल, व्यक्त भाव के स्वभाव, व्यक्त भाव के संस्कार सहज ही परिवर्तन कर देगा।

11) फरिश्ता अर्थात् दिव्यता स्वरूप। दिव्यता की शक्ति साधारणता को समाप्त कर देती है। जितनी-जितनी दिव्यता की शक्ति हर कर्म में लायेंगे उतना ही सबके मन से, मुख से स्वत: ही यह बोल निकलेंगे कि यह दिव्य दर्शनीय मूर्त हैं। अनेक भक्त जो दर्शन के अभिलाषी हैं, उनके सामने आप स्वयं दिव्य दर्शन मूर्त प्रत्यक्ष होंगे तब ही सर्व आत्मायें दर्शन कर प्रसन्न होंगी।

12) फरिश्ता अर्थात् जिसकी दुनिया ही एक बाप है। निमित्त मात्र देह में हैं और देह के सम्बन्धियों से कार्य में आते हैं लेकिन लगाव नहीं। अभी-अभी देह में कर्म करने के लिए आये और अभी-अभी देह से न्यारे। फरिश्ते सेकण्ड में यहाँ, सेकण्ड में वहाँ क्योंकि उड़ने वाले हैं। कर्म करने के लिए देह का आधार लिया और फिर ऊपर - अब यही अभ्यास बढ़ाओ।

13) फरिश्ता जीवन की विशेषता है - इच्छा मात्रम् अविद्या। देवताई जीवन में तो इच्छा की बात ही नहीं। जब ब्राह्मण जीवन सो फरिश्ता जीवन बन जाती अर्थात् कर्मातीत स्थिति को प्राप्त हो जाते तब किसी भी शुद्ध कर्म, व्यर्थ कर्म, विकर्म वा पिछला कर्म, किसी भी कर्म के बन्धन में नहीं बंध सकते।

14) फरिश्ता स्थिति का अनुभव करने के लिए विशाल दिल वाले बेहद के स्मृति स्वरूप बनो। जहाँ बेहद है वहाँ कोई भी प्रकार की हद अपने तरफ आकर्षित नहीं कर सकती। कर्मातीत का अर्थ ही है - सर्व प्रकार के हद के स्वभाव-संस्कार से अतीत अर्थात् न्यारा।

15) फरिश्ता जीवन बन्धनमुक्त जीवन है। भल सेवा का बन्धन है, लेकिन इतना फास्ट गति है जो जितना भी करे, उतना करते हुए भी सदा फ्री है। जितना ही प्यारा, उतना ही न्यारा। सदा ही स्वतन्त्रता की स्थिति का अनुभव करते हैं। शरीर और कर्म के अधीन नहीं, अगर देहधारियों के सम्बन्ध में आते भी हैं तो ऊपर से आये, संदेश दिया और यह उड़ा।

16) सम्पन्न बनना अर्थात् अपनी अन्तिम फरिश्ते जीवन की मंज़िल पर पहुंचना। जितना-जितना इस अन्तिम मंज़िल के नज़दीक आते जायेंगे उतना सब तरफ से न्यारे और बाप के प्यारे बनते जायेंगे। जैसे कोई चीज़ जब बनकर तैयार हो जाती है तो किनारा छोड़ देती है, ऐसे जितना सम्पन्न स्टेज के समीप आते जायेंगे उतना सर्व से किनारा होता जायेगा। तो सब बन्धनों से, सब तरफ के लगावों से वृत्ति द्वारा किनारा होना अर्थात् सम्पन्न वा सम्पूर्ण बनना।

17) सम्पूर्णता को समीप लाने के लिए सिर्फ दो शब्द याद रखो - मैं बिन्दु हूँ और बाप भी बिन्दु है, लेकिन बिन्दु के साथ-साथ सिन्धु है। तो एक बिन्दु की याद और एकरस अवस्था, एक की ही मत और एक के ही कर्तव्य में मददगार बनो। बाकी विस्तार में जाने की दरकार नहीं। विस्तार में जाना है तो सिर्फ सर्विस प्रति। अगर सर्विस नहीं तो बिन्दु, उसके आगे अपनी बुद्धि को चलाने की आवश्यकता नहीं है। यही सहज विधि है - सम्पूर्णता को प्राप्त करने की।

18) सम्पन्नता सदा सन्तुष्टता का अनुभव कराती है। सन्तुष्ट आत्मायें सम्पन्न होने के कारण किसी से भी तंग नहीं होगी। सम्बन्ध में भी कोई खिटखिट नहीं होगी। अगर होगी भी तो उसका असर नहीं आयेगा। किसी भी प्रकार की उलझन या विघ्न एक खेल अनुभव होगा। समस्या भी मनोरंजन का साधन बन जायेगी क्योंकि नॉलेजफुल होकर देखेंगे।

19) जैसे बाप सम्पन्न है इसलिए बाप की महिमा में सागर शब्द कहते हैं, यह सम्पन्नता को सिद्ध करता है। तो बाप समान मास्टर सागर बनना ही सम्पन्न बनना है। नदी तो फिर भी सूख जाती है। सम्पन्न आत्मायें सदा खुशी में नाचती रहेंगी। खुशी के सिवाए और कुछ अन्दर आ नहीं सकता।

20) अभी बाप समान स्वयं को और सेवा को सम्पन्न करो। बाप समान अव्यक्त वतनवासी फरिश्ता बन जाओ। बापदादा अभी भी आह्वान करते हैं। अब रहे हुए थोड़े समय में सर्व बातों में स्वयं को सम्पन्न बनाओ। अगर एक भी सम्बन्ध वा गुण की कमी है तो सम्पूर्ण स्टेज वा सम्पूर्ण मूर्त नहीं कहला सकते। बाप का गुण वा अपना आदि स्वरूप का गुण अनुभव न हो तो सम्पन्न मूर्ति कैसे कहेंगे इसलिए सबमें सम्पूर्ण बनना है।

21) जैसे बापदादा व्यक्त में आते भी अव्यक्त रूप के, अव्यक्त देश के अव्यक्ति प्रवाह में रहते हैं। बच्चों को यह अनुभव कराने के लिए साकार वतन में आते हैं। ऐसे आप सभी भी अपने अव्यक्त स्थिति का अनुभव औरों को कराओ। जब अव्यक्त स्थिति की स्टेज सम्पूर्ण होगी तब ही अपने राज्य में साथ चलना होगा। तो एक आंख में अव्यक्त सम्पूर्ण स्थिति, दूसरी आंख में राज्य पद हो।

22) बापदादा सभी बच्चों के सम्पूर्ण मुखड़े देखते हैं। सम्पूर्णता नम्बरवार होगी। माला के 108 मणके जो हैं, तो नम्बरवन मणका और एक सौ आठवाँ मणका दोनों को सम्पूर्ण अर्थात् विजयी रत्न कहेंगे। लेकिन अपने नम्बर प्रमाण सम्पूर्णता को प्राप्त करेंगे। उनके लिए सारे ड्रामा के अन्दर वही सम्पूर्णता की फर्स्ट स्टेज है।

23) सम्पूर्णता को प्राप्त करने के लिए सदा उपराम और दृष्टा बनो। अपनी देह से भी उपराम, अपनी बुद्धि से उपराम, मेरे संस्कार हैं, इस मेरेपन से भी उपराम। मैं यह समझती हूँ, इस मैं पन से भी उपराम। तो मैं शरीर हूँ, एक तो यह छोड़ना है, दूसरा मैं समझती हूँ, मैं ज्ञानी तू आत्मा हूँ, मैं बुद्धिमान हूँ, यह मैं पन मिटाना है। जहाँ मैं शब्द आता है वहाँ बापदादा याद आये। जहाँ मेरी समझ आती है वहाँ श्रीमत याद आये। ऐसे ही साक्षी दृष्टा भी बनना है तब ही सम्पूर्णता को प्राप्त कर सकेंगे।

24) आपकी लास्ट सम्पन्न स्टेज का गायन है – सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी, सम्पूर्ण अहिंसक.... महिमा में भी सबके साथ सम्पन्न व सम्पूर्ण शब्द है। तो चेक करो

यह सम्पन्न-पन का वर्सा बाप द्वारा प्राप्त कर लिया है? कहाँ तक सम्पन्न वा सम्पूर्ण बने हैं?

25) सम्पन्नता अचल स्थिति का अनुभव कराती है। जब सब बातों में सम्पन्न बनेंगे तब यह आंख व बुद्धि किसी तरफ नहीं डूबेगी। सदा रुहानियत में रहेंगे। अनेक व्यर्थ संकल्पों वा अनेक तरफ बुद्धि व दृष्टि जाने से परे, सर्व फिकरों से फारिग और अपने बाप द्वारा मिले हुए खजाने में सदा रमण करते रहेंगे। अन्य कोई संकल्प करने की फुर्सत नहीं होगी।

26) अपनी सब जिम्मेवारियों का बोझ बाप को देकर आप डबल लाइट स्थिति में फरिश्तों की दुनिया में रमण करते रहो। फरिश्तों की दुनिया में रहने से बहुत ही हल्कापन अनुभव होगा जैसे कि सूक्ष्मवतन को ही स्थूलवतन में बसा दिया है। जब स्थूल और सूक्ष्म में अन्तर नहीं रहेगा, यह व्यक्त देश जैसे अव्यक्त देश बन जायेगा फिर सम्पूर्णता के समीप आ जायेंगे।

27) सम्पूर्णता को समीप लाने के लिए संस्कारों को मिलाना होगा। संस्कार मिलाने के लिए कुछ भुलाना होगा, कुछ मिटाना होगा और कुछ समाना होगा। इन्हीं तीन बातों से अन्तिम सिद्धि का स्वरूप सहज अनुभव होगा। इसके लिए एक दो की बातों को स्वीकार करो और सत्कार दो तब सम्पूर्णता और सफलता दोनों ही समीप आयेंगी।

28) सम्पन्न बनने वाली आत्माओं के सामने अब परीक्षायें व विघ्न भी अति के रूप में आयेंगे, इसलिये आश्चर्य नहीं खाना है कि पहले यह नहीं था, अब क्यों है? फाइनल पेपर में आश्चर्यजनक बातें क्वेश्चन के रुप में आयेंगी, चाहते हुए भी बुद्धि में क्वेश्चन उत्पन्न होंगे, यही एक सेकेण्ड का पेपर होगा। क्यों का संकल्प चन्द्रवंशी की क्यू में लगा देगा। जब यह क्यों शब्द निकल जायेगा तब ड्रामा की भावी पर एकरस स्थेरियम रहेंगे। तो अभी क्यों की क्यू को खत्म कर सम्पन्न और सम्पूर्ण बन समय को समीप लाओ।

29) जैसे चन्द्रमा जब 16 कला सम्पूर्ण हो जाता है तो ना चाहते हुए भी हरेक को अपनी तरफ आकर्षित करता है ऐसे कोई भी वस्तु सम्पन्न होती है तो अपने आप आकर्षण करती है। तो जब सम्पूर्णता के समीप पहुंचेंगे तो विश्व की सर्व आत्माओं को स्वत: आकर्षित करेंगे क्योंकि सम्पूर्णता में प्रभाव की शक्ति होती है। तो प्रभावशाली बनने के लिए सम्पन्न बनना पड़े।

30) अभी समय प्रमाण लगाव-मुक्त बेहद के वैरागी बनो। मन से वैराग्य हो। सम्पूर्णता के दर्पण से सूक्ष्म लगाव को चेक करो। यही ब्रह्मा बाप के प्यार की गिफ्ट ब्रह्मा बाप को दो, सब किनारे छोड़ो। मुक्त हो जाओ। प्रतिज्ञा करो कि अब समय प्रमाण सम्पूर्णता का दिवस मनाना ही है। ऐसा दृढ़ संकल्प करो कि कुछ भी चला जाए लेकिन यह प्रतिज्ञा न जाए।

(त्रिमूर्ति दादियों के अमृत वचन)

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* *मधुबन*

"मुरली सुनते हर प्वाइंट का स्वरूप बनते जाओ तो कभी थकावट वा सुस्ती नहीं आयेगी" (गुल्जार दादी - 28-8-07)

जब मुरली सुनते हैं तो बाबा जो प्वाइन्ट कह रहा है उस प्वाइन्ट का अनुभव करते जायें और सुनते जायें तो नींद या भारीपन कभी नहीं आयेगा, जैसे कोई खुराक खाये तो ये मन की खुराक है ना, तो खाना खाते समय कोई सोते हैं क्या? सोये तो फिर खाना कहाँ जायेगा! तो यह भी मन का भोजन है, तो मन नाचना चाहिए ना! हमेशा मुरली जब हम सुनते हैं तो यह नहीं समझें कि बाबा क्लास के लिए मुरली चला रहा है, बहुत बैठे हैं ना। लेकिन नहीं, बाबा मुरली द्वारा पर्सनल मेरे से बात कर रहा है। अब कोई मेरे से बात कर रहा हो तो उस समय झुटका खायेंगे क्या! बाबा मेरे लिए आया है, मेरे लिए बाबा सुना रहा है और मेरा बाबा है अगर इस स्मृति से बैठेंगे तो कभी भी मुरली सुनते हुए सुस्ती नहीं आयेगी।

साकार के समय मुरली के बीच में कोई ने अगर उबासी ली और बाबा की नज़र पड़ गई तो बाबा फौरन कहता था इसको उठाओ क्योंकि बाबा को यही आता था कि कल्प में एक बार इतना दूर से शिवबाबा आके पढ़ाता है और यह ऐसे समय पर उबासी देवे...। तो जब जो बात जैसी बाबा कहते हैं उसी समय वैसा ही अनुभव करते जायें, परमधाम कहा तो परमधाम की

स्मृति आ गई, अगर सूक्ष्मवतन कहा तो वो स्मृति में आ जाये, भक्तों की बातें की तो मैं देवी के रूप में भक्तों को देख रही हूँ। तो जो बात बाबा कहता है उसी अनुभव में अगर हम होंगे, तो नींद या भारीपन नहीं आयेगा। मानो अतीन्द्रिय सुख का अनुभव हो रहा है तो नींद, अलबेलापन या सुस्ती आयेगी क्या? तो हमेशा मुरली सुनने के समय हमें यह चेक करना है कि आज मेरे लिए बाबा क्या-क्या सौगात लाये हैं? मेरा टीचर इतना दूर से आया है, वैसे भी कोई दूर से आता है तो उसका कितना स्वागत किया जाता है। यह तो 5 हजार वर्ष के बाद बाबा हमारे लिए आता है। जैसे मेरा बाबा कहते हैं, वैसे मेरे लिए आया हुआ है, यह पर्सनल भासना अगर हमारे पास होगी तो बहुत स्फुर्ति से मुरली सुनेंगे और अनुभव होने लगेगा कि बाबा हमारी झोली में इतने मोती डालकर ज्ञान रत्नों से भरपूर कर रहा है। तो हमारा अटेन्शन मुरली सुनने में होना चाहिए। मुरली में बाबा ने जो कहा उसमें हाँ या ना नहीं किया तो बाबा कहता था यह कौन-सा बुद्धू सामने बैठा है? इतना अटेन्शन ब्रह्मा बाबा हमारे ऊपर देता था। बाबा शिक्षायें भी देता तो प्यार भी इतना करता।

ऐसे ही हमारी दादी की नेचर थी - समझो कोई छोटी बहन जाके दादी को कहती है दादी, आज ऐसा हुआ मेरे को बहुत रोना आ गया, मेरे को फीलिंग आ गई, तो दादी कभी भी उनकी बात बड़ी बहन को सुनायेंगी नहीं, उल्हना नहीं देगी। उसको ऐसा खुश करके भेजती थी, उसको ठीक कर देती थी। जनरल में क्लास कराके टोटल शिक्षा देगी, पर्सनल में इशारे से सुनायेगी, सीधा नहीं कहेगी कि तुमने यह किया है, उस बात को दादी फिर दिल में नहीं रखती थी। दिल में अगर किसी बात की फीलिंग बैठ जाती है तो उसकी खुशी गुम हो जाती है क्योंकि दिल में एक ही बात बैठेगी ना। दो तो नहीं बैठेंगी। बीती हुई बात रिपीट होती रहती है तो खुशी गायब हो जाती है इसलिए दिल में बाबा की बातों को बिठा दो। मुरली इतना प्यार से सुनो जो वही रिपीट होती रहे, दूसरी कोई बात आये ही नहीं। अच्छा।

दादी जानकी जी द्वारा उच्चारित अनमोल वचन

"बल, शक्ति और एनर्जी जमा करने की युक्तियां, कामनाओं का त्याग कर शुभ भावना सम्पन्न बनो"

(दादी जानकी जी (17-7-06)

बाबा से एक मिलता है बल, दूसरी मिलती है शक्ति, तीसरी है एनर्जी। निर्बल को चाहिए बल। निर्बल है तो निर्बल की लड़ाई है बलवान से। आंधी तूफान ऐसा आता है, जो निर्बल बिचारा... आखिर भी जीत किसकी हुई? दीवे की। उसमें चाहिए आत्मिक बल, देह-अभिमान दु:खी करता है।

शुभ भावना तब रह सकती है जब पहले कामना हमारी निष्कामी हो। थोड़ी भी कामना है तो भावना इतनी अच्छी श्रेष्ठ नहीं होगी। भले काम महाशत्रु है, उसको समझ लिया पर कोई भी प्रकार की कामना भी दु:ख देती है। कुछ भी नहीं चाहिए पर यह इच्छा है माना कामना है। वह इच्छा जब तक पूरी नहीं हुई तो भावना भी नहीं बैठती है। आपस में अच्छी भावना हो, श्रेष्ठ भावना हो।

सेवा की गाड़ी भावना के आधार पर चल रही है। आपस में भावना अच्छी है तो एक दो के विचार स्वीकार कर लेंगे, शक्ति आ जायेगी। फिर इच्छा भी पूरी हो जाती है। इच्छा रखी पूरी नहीं हुई तो भावना नहीं बैठती। अपनी भावना को अच्छा, शुद्ध, श्रेष्ठ फिर दृढ़ विश्वास वाली बनाना है।

जो बाबा से मिलता है कहीं से नहीं मिलता है। इतना अन्दर से विश्वास वाला हमारा आवाज निकले। मैं कामधेनु सबकी कामना पूरी करने वाली हूँ, तो क्या मेरे पास कोई कामना होगी? तो चेक करो कल्प वृक्ष के नीचे बैठे कामधेनु का पार्ट है या कामना वाला पार्ट है? कल्प वृक्ष के नीचे वह बैठता है जो त्यागी है, दिलवाला के साथ है, उसके पास कुछ नहीं है। जब हमारे में कोई कामना नहीं है माना सच्ची भावना है। बाबा से बहुत मिला है इसलिए न सिर्फ प्यार है, पर भावना है। जो मिला है वह यूज़ हो रहा है।

जो आवश्यकता है वह पूरी होनी ही है, कोई चिंता, कोई चिंतन नहीं है। इच्छा वाले को चिंता होगी, चिंतन भी होगा, भेंट भी होगी इसके पास है मेरे पास कम है। पर मेरे को जो बाबा दे रहा है, इतनी अच्छी शक्ति मिल रही है। जो बात सामने आई, चली गई। सहन शक्ति आ गई। बुद्धि स्वच्छ है। यह शक्ति कहाँ से आई? बाबा से मिली। मुझे बुद्धि को एकाग्रता की शक्ति से अचल-अडोल बनाने का भाग्य मिला। तो पहले ज्ञान से अपनी कमजोरी खत्म करूं, फिर बाबा से रिलेशन, कनेक्शन हो, योग चलते फिरते हो।

अलर्ट रहना खूबी है। सेना सदैव अलर्ट रहती है। अलर्ट रहने की कमी होगी तो सुस्ती घेराव करेगी। लिखा पढ़ी करेंगे, मोबाइल कान में होगा, उस समय अलर्ट होंगे। पर मुरली सुनने समय, योग में सुस्ती होगी। यह बहुत बड़ी कमी है। हमारे बाबा की सीधी बैठक तो देखो। बाबा कैसे चलता है, बैठता है। बाबा को देखकर तो सीखो। यह सुस्ती एक विघ्न है, बीमारी नहीं है। अगर हम अलर्ट नहीं रहेंगे तो कोई न कोई कारण हमको सुस्त बनायेगा। कारण भाव स्वभाव का होगा, थकावट यहाँ बैठते पैदा हो जायेगी। सोल्डर में, सिर में दर्द पड़ेगा। ज्ञान का बल है तो मेरे में कोई ऐसी कमजोरी न हो जो निमित्त बने हुए को शोभा न दे। अलबेलाई, सुस्ती और बहाना, तीनों अच्छी तरह से अपना काम करते हैं। अगर निमित्त बने हुए में यह तीनों हैं तो योग का अनुभव नहीं कर सकते। याद, योग और यात्रा किसको कहा जाता है, उसका अनुभव नहीं हो सकता।

याद माना और किसकी बात याद नहीं है। योग माना कनेक्शन ऐसा है, योगयुक्त, युक्तियुक्त हैं। यात्रा है जा रहे हैं, शडपंथ पर (बिल्कुल किनारे) बैठे हैं। कोई बात की चिंता, चिंतन नहीं है, निश्चिंत हैं। बाबा अव्यक्त वतन में मुझे खींच रहा है। जैसे बाबा साकार में होते व्यक्त भाव से परे रहा है, ऐसे मुझे रहना है। चाहे अमृतवेले का नियम है, क्लास का अथवा शाम के योग का नियम है, किसी भी नियम में हम अपने को लूज न छोड़ें। अगर 5 मिनट भी लेट आने की आदत पड़ी, तो वह छोड़ेगी नहीं। बहुतकाल की प्रैक्टिस होगी तो हर बात सहज पार हो जायेगी। कोई कारण होगा भी तो चला जायेगा। बाबा से जो बल मिला है उसका निश्चय बैठ गया है। आटोमेटिक लाइट मिल रही है क्योंकि डायरेक्ट परमात्मा से हमारा कनेक्शन है। बाबा की शक्ति चला रही है। अगर स्वयं आत्मा अपने संस्कार के वश कमजोर होगी तो बाबा की शक्ति कैसे ले सकेगी। अपने कमजोर स्वभाव, संस्कार के वश या दूसरे के प्रभाव दबाव में कमजोर रहे हैं, अन्दर से आता है कि हमने बहुत सहन किया है, तो उसे परमात्म शक्ति का अनुभव नहीं हो सकता। भले देह के सम्बन्ध नहीं हैं, यहाँ परिवार में, सेवा में किसके साथ सम्बन्ध हो गया, वह हिसाब-किताब मेरी बुद्धि को खींचता है, फिर युद्ध करनी पड़ती है जो शक्ल से दिखाई देता है। बोलते नहीं हैं, क्योंकि बात बढ़ जायेगी। दबा लेते हैं तो शक्ल से लगेगा बिचारी के पास बहुत कुछ अन्दर है। दबाया तो योग कैसा होगा? रोये तो सब देख लेंगे तो मुश्किल, न रोये तो भी मुश्किल। हंसना, ओम् शान्ति कहना भी सहज नहीं है। अगर सेकण्ड में स्वधर्म में टिक जाएं, बाबा सामने आ जाए, तो बड़ी बात भी छोटी हो जायेगी। कुछ है ही नहीं। जैसे बीमार के लिए बीमारी बहुत बड़ी लगती लेकिन सर्जन के लिए वह कुछ भी नहीं है। वह कभी अपनी शक्ल ऐसी नहीं बनायेंगे। उनके पास अनुभव है, अच्छी दवाई निकाल देंगे। हमारी शक्ल पर क्यों आता है? अनुभवी हैं - माया क्या है, प्रभू क्या है। पता है, माया से जीते जीत, माया से हारे हार। अगर अन्दर से मुस्करायेंगे तो मुश्किलात चली जायेगी। मुश्किलात शक्ल पर आई तो एक जायेगी दूसरी आयेगी, छोड़ेगी नहीं। आखिर मेरा हाल क्या होगा?

मैं सोचती हूँ बाबा मैं आपके पास क्यों आई हूँ? क्या ऐसे माथाखोरी करने आई हूँ? मेरी अन्त मति सो गति अच्छी हो, मैं आपके साथ 84 के चक्कर में तो आऊं। ब्रह्मा बाबा को शिवबाबा ने कहा आपका अन्तिम जन्म है, तो हमारा कौन सा जन्म है? यह बातें हमारी याद को बलवान बना देती हैं। मैं कौन हूँ, मेरी लाइफ का प्रपज़ क्या है? किसलिए जीती हूँ?

20 वीं सदी में तीन का नाम प्रसिद्ध हुआ है। मदर टेरेसा को बहुत रहमदिल मानते हैं, मण्डेला में क्षमा भाव बहुत है, महात्मा गांधी में अहिंसा, त्याग, देश सेवा की भावना थी। दुनिया मानती है। हर एक अपने देश का भला करने चाहते हैं, पर तीन बातें करने नहीं देती हैं, करप्शन, काम्पीटीशन, क्रिटिसीज़न, एक आगे बढ़ता है तो दूसरा उसको क्रिटिसाइज़ करके गिराता है। लोग देख रहे हैं, यही एक संस्था है जो इन तीनों बातों से मुक्त है। ब्रह्मा बाबा ने हम सबको ऐसा शक्तिशाली बना करके कार्य को बढ़ाया है, लोग देख रहे हैं और सब संस्थायें जो हुई हैं, उसमें फूट पड़ी है। कोई भी संस्था जो स्थापन करने वाले थे उनकी भावना अच्छी थी, पर पीछे वाले आपस में दो भी नहीं मिल सके हैं। उनके पास यह प्रूफ है। उन्हों में करप्शन, काम्पीटीशन और क्रिटिसीज़न है। वह संस्थायें इसी कारण काम नहीं कर सकी हैं। हमारे अन्दर यह अंशमात्र भी न हो। बाबा चला रहा है, जो इन तीन के चक्कर में आता है वह अपना देव पद खुद गंवाता है। जो ऊंच पद पाने चाहता है वह तीन से बचकर रहता है। वह एकता में आयेगा, भिन्नता को खत्म करेगा। सत्यता, नम्रता, धैर्यता, गम्भीरता हमारे जीवन में हो। जैसे हमारे मम्मा बाबा। सच्चाई सिद्ध नहीं की जाती है, सच्चाई समय पर आपेही सबको नज़र आती है।

हम सतयुगी दुनिया की स्थापना योगबल से कर रहे हैं। जैसे बाबा ने हमें योगबल से पैदा किया, अपने योग से हमारी पालना की। फिर भी बाबा यह नहीं कहता है मैंने पालना की है, पालना भले की है पर तुम्हारा बाप वह है। कितना अपने आपको न्यारा रखता है। जिस तरह से मेरा जन्म, पालना हुई है, यह मेरी लाइफ के अन्दर कूट कूट कर भरा हुआ हो, जो लगे यह जो कर रहे हैं वह कोई नहीं कर सकते। यहाँ बहिनों ने भाईयों को आगे रखा है, भाईयों ने फिर बहिनों को आगे रखा है। यह कहीं विश्व में नहीं हुआ है। वहाँ तो बहनें कहेंगी हमको राइट मिलना चाहिए, भाई राइट देने नहीं देते। यह जो लड़ाई है हमारे मन में नहीं है। लड़ करके हम लेने वाले नहीं हैं, राइट पथ पर चल

करके आगे बढ़ रहे हैं।

धर्म हमारा सत्य है, कर्म हमारा श्रेष्ठ है। निमित्त आत्मा की सच्चाई के आधार से ही सबकी भावना बैठती है। जिसने कुछ भी बाबा के यज्ञ प्रति दिया, कभी हमने अपने पास नहीं रखा होगा। यज्ञ के लिए एक पापड़ भी मिलेगा तो वह हम नहीं खायेंगी। यज्ञ के लिए जो मिलेगा यज्ञ में सीधा गया। बाबा का यज्ञ है, सबका भाग्य बन जाये। परन्तु आज के जमाने में अलग प्रकार का सोच है। कहेंगे आईवेल के लिए थोड़ा तो अपने पास होना चाहिए। कईयों ने जब शरीर छोड़ा है तो उनके बैग से अलमारियों से निकला है। गई इज्जत। हमारी अलमारी में कभी आप 5 पाउण्ड नहीं देखेंगे। आज भी हमारा शरीर छूटे तो निश्चिंत हूँ। मैं मेरा से फ्री हूँ। मेरे नाम से कोई बैंक एकाउन्ट नहीं है। तो अपने आपसे पूछो कि मेरी लाइफ का प्रपज़ क्या है?

हम सेवा अर्थ हैं, सेवा में कोई लगाव नहीं है। सेवा में लगाव लिप्त बना देता है। जो सेवा में लिप्त है, उसको आता है मेरा छूट न जाये, फिर मेरा ठिकाना कहाँ होगा, कहाँ जायेंगी, कौन से सेन्टर पर रहेंगी, आखिर भी शरीर बड़ा हुआ है, कोई तो स्थान चाहिए ना। अभी ऐसे विचारों वाली लाइफ से किसको लाइट मिलेगी? जो अपने को ही समझते हैं, उम्र बड़ी है कहाँ भटकेंगी, इन विचारों में रहने वाला क्या योगी है? ऐसे विचारों में चलने वाली आत्मा की गति क्या होगी।

तो एनर्जी कहाँ से आती है? पहले ज्ञान से कमजोरियों को खत्म करें, फिर योग से शक्ति आती रहेगी। किसी का आधार नहीं, किसके अधीन नहीं। शरीर के भी अधीन नहीं हैं। बाबा ने तो लोन पर दिया, हमने तो समर्पण कर दिया। मन-बुद्धि से समर्पण हूँ। कोई आत्मा के आगे समर्पण नहीं हैं, जो उसके अन्डर रहूं। मैं आत्मा परमात्मा को शरीर सहित समर्पण हुई हूँ, तो क्या वह इस शरीर को नहीं चलायेगा। जैसे बाबा साकार में खिला रहा है। हम भी बाबा की इस अमानत को (शरीर को) स्वच्छता से रखते हैं। जितना हम तन का फिकर करते हैं, जितना इसका ध्यान रखते हैं, उतना टाइम हमारा ध्यान कहाँ है!

जो भगवान का ध्यान करते हैं, उनका ध्यान भगवान रखता है। अगर मैं ही अपना ध्यान रखूंगी, या दूसरे को कहूंगी तुम मेरा ध्यान ही नहीं रखती। तो बाबा हमारा ध्यान क्यों रखेगा?

आजकल जो फैशनबुल कोर्स निकले हैं, उनसे कोई वारिस पैदा नहीं हुए हैं। तीर जो लगा मैं आत्मा बाबा की हूँ... निज़ ज्ञान से लगा है। उसी से समर्पण हुए हैं। समर्पण होने में भी टाइम नहीं लगाया। बाबा के सुनाये हुए निज ज्ञान ने समर्पण करा दिया। मुझे यह फैशनबुल कोर्स कराना आता ही नहीं है।

हमारी बुद्धि में स्वच्छता हो, बाबा की शक्ति हो, तो एक डेढ़ घण्टा बोल सकते हैं। यह एनर्जी आटोमेटिक काम करती है। जैसे सोलार एनर्जी पहले कहाँ जमा करते हैं, फिर अपना काम आपेही करती है। बुद्धि ऐसी एनर्जी खीचे जो समय पर क्वीक काम करे, कहीं रूक न जाये, वह तब होगी जब ज्ञान सूर्य से डायरेक्ट कनेक्शन होगा।

ज्ञान सागर बाबा है, उसमें डीप जाओ फिर ऊपर आओ। एनर्जी काम करती है। वही शक्ति चला रही है, भगवान ने जो रचना रची है, उसमें हमारा हीरो पार्ट है। डायरेक्टर खुद कह रहा है तुम्हारी यह विशेषता है, हम काम्पीटीशन में नहीं आती, इसकी विशेषता मेरे में आ जाए, यह कैसे हो सकता। खुश होती हूँ इसकी अपनी विशेषता है। विशेषता देखना बड़ी बात नहीं है, लेकिन विशेषता देखते विशेष आत्मा बन जाऊं। विशेषता देखने का भी अक्ल चाहिए। अगर अपनी विशेषता दिखाने के लिए बुद्धि चल रही है तो वह विशेष आत्मा नहीं है। सबकी विशेषता अपनी-अपनी है, रिगार्ड है, संगमयुग है। किससे भेंट किया तो यह मेरी विशेषता नहीं, कमी हो गई। किसी से जरा सा लगाव या घृणा है तो विशेष आत्मा बनने नहीं देगी। यह दो बातें विशेष आत्मा बनने में रूकावट डालती हैं।

बाबा सब कुछ बता करके फ्री हो जाता है, अगर कोई उल्टा करता है तो उसके कर्म का अपने आप फिक्स हो जाता है। कोई अच्छा करते हैं तो बाबा उसे मदद करता है। बाकी कोई गलत करता है तो बाबा कहता मैं उसे सजा नहीं देता, उसे कर्मों का फल मिलना ही है। बाबा अपने को फ्री कर देता। तो जब बाबा ही अपने को फ्री कर देता तो मैं क्यों चक्कर में आऊं। जो अपने को बड़ा समझते हैं वह चक्कर में ज्यादा आते हैं। हमारा दिमाग कोई इसलिए नहीं है। बाबा ने कर्मों की गति का ज्ञान दिया है। कर्म का है फल, योग का है बल। जैसा कर्म करेंगे वैसा पायेंगे। हम क्यों किसके कर्मों के चक्कर में आऊं, चित पर रखूँ फिर मुख पर लाऊं तो एनर्जी, शक्ति वा बल कहाँ से आयेगा। कई तो याद में भी नहीं बैठ सकते, कोई सेवा भी नहीं कर सकते, किसको अपना नहीं समझ सकते... अगर मेरे प्रति किसी के मन में कुछ हो तो उसको मिटा दूं। अपने चिंतन को श्रेष्ठ बनाकर ऐसी स्थिति बनायें जो एक दो को प्रेरणा देने वाली हो। जैसे मम्मा बाबा की हमको प्रेरणा मिलती है, ऐसे सबको हमसे प्रेरणा मिले।

जितना हम हल्के हैं उतना संग साथ रहने वाले हल्के बन जाते हैं। कहाँ भी पांव रखो हर एक को लाइट माइट का अनुभव होने लगता है। भारीपन न लगे। अगर शक्ल भारी है तो वह भी बाबा के काम लायक बच्चा नहीं। उसको कौन काम करने कहेगा। तो इतने हल्के रहें, बाबा करावनहार करा रहा है, चलाने वाला चला रहा है। न हम चलते हैं, न करते हैं इससे आत्माओं को बल मिलता है, यह नहीं करती है, इससे कराने वाला करा रहा है, चलाने वाला चला रहा है। इसमें आटोमेटिक बाबा नज़र आयेगा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन

"अपनी सेवा से कभी प्रभावित नहीं होना, दूसरों की सेवा देख ईर्ष्या नहीं करना"

1) मीठे बाबा ने हमें यह चार मन्त्र दिये हैं 1- अलबेले नहीं बनो, अलर्ट बनो। 2- घृणा नहीं रखो, शुभ भावना रखो। 3- ईर्ष्या नहीं रखो परन्तु अपने दिल में रेस करने की, उन्नति करने की दृढ़ता रखो। 4- किसी पर भी प्रभावित नहीं होना। हम सब एक बाबा के ऊपर प्रभावित हो गये, तो व्यक्ति, वैभव, वस्तु... किसी पर भी प्रभावित हो नहीं सकते। अपनी सेवा से भी प्रभावित नहीं होना है। अगर अपनी सेवा से भी प्रभावित होते तो उसमें भी कभी इगो आ जाता है। जब बाबा कहता कि मैं टच करके करा देता हूँ, तो फिर हमारी सेवा कहाँ। हम अपनी सेवा से प्रभावित हो कैसे सकते। खुशी है, सभी बहुत अच्छे उमंग से सेवा करें, दूसरों की सेवा देखकर खुद के नैन शीतल हों, ठण्डे हों। इससे अपार खुशी मिलती है। दूसरे करते हैं तो उसे देख नैन ठण्डे शीतल होते रहें, इससे अपने आपको बहुत बड़ा बल मिलता है। यह अलग बात है – जो ओटे सो अर्जुन, हर बात में उमंग इतना ही रखना चाहिए कि हमें हे अर्जुन बनकर हर कार्य करना है। इसके साथ-साथ यह भी बैलेन्स हो, जो भी करे उसमें इतना ही खुशी का पारा रहना चाहिए। तो यह ग्रुप अगर संकल्प दृढ़ करके जाए कि हमें हे अर्जुन बनना है, हमें पास विद आनर होना है, इसके लिए भले कुर्बानी करनी पड़े। यह भी कहने में कुर्बानी शब्द आता है। कुर्बानी भी किस बात की, हम तो हैं ही कुर्बान। कोई आगे जाये तो उसमें भी हमारी खुशी है।

2) कई पूछते हैं दादी आपके ऊपर इतनी बड़ी जवाबदारी है, बर्डन है कभी फिक्र नहीं होती? नींद नहीं फिटती? मैं कहती यही बाबा की मुझे बहुत बड़ी दुआयें हैं कि मैं तकिये पर सिर रखती और मिनट डेढ़ मिनट में नींद आ जाती, यह मुझे बड़ा वरदान है। कारण, ड्रामा, बिन्दु, ओम शान्ति, बाबा आप बैठे हो, आपको जो चाहिए कराओ। यह पक्का याद रहता है। भक्ति मार्ग में भी एक प्रेयर है - शल सबको सुबुद्धि दे भगवान...। मैं कहती बाबा आपकी सबको श्रीमत है, सब श्रीमत पर चलें, यही मेरी हरेक के प्रति शुभ भावना है। इसी श्रीमत से हम सबका कल्याण होता। श्रीमत पर चलते चलो तो दूसरी कोई बातें हैं ही नहीं। जहाँ मनमत होती वहाँ विघ्न आता, जहाँ श्रीमत है वहाँ विघ्न आता ही नहीं।

3) मेरे मन में सदा एक बात रहती – बाबा यह सब आपका परिवार है, मुझे कभी आप सभी ड्यूटी देते, दादी आप प्रेजीडेन्ट हो, दादी आप ये हो... आपकी मेरे लिए इतनी भावना है उसके लिए बहुत-बहुत थैंक्स। पर मैं बाबा को कहती - बाबा मुझे कोई प्रेजीडेट कहे, मुझे बड़ा कहे.. यह मुझे नहीं चाहिए। परन्तु आप मुझे कोई सेवा देते भी हो तो उसकी योग्यता भी आप ही देना। बाबा आप ही मुझे वरदान से चलाओ, मैं तो बहुत छोटी हूँ, न मैं इतनी पढ़ी, न मैं इतना भाषण करना जानती... आप सबने मुझे टोपी दी है, जैसे मैं बहुत बड़ी अक्ल वाली हूँ, लेकिन मैं आप सबकी छोटी बहन हूँ। फिर भी आप सबका मेरे लिए प्यार है या शुभ कामना है, तो यह भी आप सभी का थैंक्स।

4) बाबा और आप सभी की दुआयें हैं। मैं तो आप सभी की दुआयें ही झोली में सदा मांगती। मुझे और कुछ नहीं चाहिए क्योंकि कार्य बाबा का है, मेरा नहीं है। जैसे भोलानाथ बाबा का भण्डारा है, भोलानाथ बाबा का यह यज्ञ है, वैसे भोलानाथ बाबा का बेहद परिवार है। तो सभी उसके हैं, न हम किसी के हैं, न मेरा कोई है। हम सब उसी के हैं इसलिए सब हमारे हैं, हम सबके हैं। ऐसी भावना में रहने से बुद्धि बहुत-बहुत हल्की रहती। बस, इतना पुरुषार्थ जरूर रहता कि बाबा ने जो विल पावर दी है, वह सदा साथ रहे, सर्वशक्तियां साथ रहें, योग का ऐसा अपना चार्ट रहे जो अन्त में बैठे-बैठे उसी कर्मातीत स्थिति में यह तन चला जाए। बस सदा यह फुरना रहता कि बाबा आपकी यादों में सभी की अत्यन्त दुआओं से ऐसी स्थिति में बैठें, जैसेकि हम सम्पन्न फरिश्ता हैं, यह पुराना तन छोड़कर फरिश्ता, कर्मातीत बनकर आपकी गोद में उड़कर आ जाएं। बस केवल यही पुरुषार्थ रहता। तो योग की ऐसी सूक्ष्म स्थिति हो। सेवा तो दिन रात है और चलेगी। पर सेवा के साथ-साथ सूक्ष्म स्व-उन्नति पर इतना अटेन्शन रखो, जो पास विद आनर हो जाओ। अच्छा। ओम् शान्ति।